खास खबरें

ऐसा गांव, जहां 19 साल से अकेली रह रही महिला खुद ही है मेयर, खुद ही लाइब्रेरियन

संयुक्त राज्य अमेरिका में नेब्रास्का की मोनोवी में रहने वाली एल्सी आइलर गांव की एकमात्र शेष निवासी हैं जो अपने टैक्सों का खुद भुगतान करती हैं, अपना खुद का शराब लाइसेंस देती हैं, अपने महापौर चुनावों का विज्ञापन करती है, और खुद के लिए ही वोट करती हैं। सुनसान शहर में उसका एकांत जीवन तब शुरू हुआ जब 2004 में उसके पति का निधन हो गया, जिससे वह अकेली निवासी हो गई।

एल्सी आइलर शहर के मेयर, बारटेंडर और लाइब्रेरियन हैं। जहां दुनिया की पूरी आबादी महामारी और सोशल डिस्टेंसिंग के मानदंडों को फॉलो कर रही हैं, वहीं आइल खुद को अकेला पाकर खुश नहीं हैं। मीलों दूर से उससे लोग अक्सर मिलने आते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद खेती की स्थिति और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाएं खराब हो गईं, जिससे मोनोवी के पूरे समुदायों को हरियाली वाले चरागाहों की ओर देखना पड़ा। डाकघर और अंतिम तीन किराना दुकानें 1967 और 1970 के बीच बंद हो गईं, साथ ही 1974 में स्कूल भी बंद हो गया।

पति के मौत के बाद हो गईं बिल्कुल अकेली–उसके बच्चे भी काम की तलाश में निकल गए और कुछ ही समय में, शहर की आबादी घटकर दो हो गई, जिससे वह और उसका पति एकमात्र निवासी बन गए। लेकिन वर्तमान में, आइलर अकेले अपने शहर का मैनेजमेंट करती हैं और मोनोवी की एकमात्र निवासी हैं।

मजदूर ने पेश की मिसाल बकरियां बेचकर स्कूल को दान दिए 2.5 लाख रुपए

उत्तराखंड में बागेश्वर के रहने वाले ईश्वरी लाल शाह की जिंदगी में जब वो मौका आया तो उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति और जरूरतों को दरकिनार कर अपनी सारी जमापूंजी स्कूली बच्चों के लिए दान कर दी। ईश्वरी लाल शाह मजदूरी करते हैं, बकरियां पालकर परिवार चलाते हैं, लेकिन स्कूल की मदद करने के लिए उन्होंने ढाई लाख रुपये दान किए हैं। ये रकम ईश्वरी लाल शाह ने बकरियां बेचकर जुटाई।

ईश्वरी लाल शाह करुली गांव में रहते हैं। करीब 15 साल पहले वो बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल के लिए गांव लौट आए थे और यहीं पर मजदूरी करने लगे। कई बार वो बकरियां चराते हुए जूनियर हाईस्कूल करुली की तरफ भी चले जाया करते थे वहां उन्होंने देखा कि स्कूल में चार दीवारी नहीं है। जिस वजह से जानवर स्कूली की सीमा में पहुंचकर वहां गंदगी कर देते थे। खेल मैदान की हालत भी खराब थी। तब ईश्वरी लाल ने सोचा कि वो स्कूल के भले के लिए कुछ करेंगे।उन्होंने बकरियां बेचने का फैसला लिया और इस रकम से स्कूल का मैदान बनाने का निश्चय किया। ईश्वरी बताते हैं कि उनकी बिटिया इसी स्कूल में कक्षा सात में पढ़ती है। बच्चों को खेलते देख उन्हें बचपन के दिन याद आने लगते हैं। जब वो स्कूल में पढ़ते थे तो उन्हें दुनिया का कुछ अता-पता नहीं था, पर आजकल बच्चे सब जानते हैं। उन्हें सभी सुविधाएं मिलनी चाहिए। ईश्वरी लाल भले ही गरीब हों, लेकिन उनका दिल बहुत बड़ा है। वह कहते हैं कि उनसे स्कूल के लिए जितना बन पड़ा, उन्होंने किया। उनके दिए दान से स्कूल में खेल मैदान और चारदीवारी बन सकेगी।

30 फीट की याच और 210 दिन, समुद्र में अकेले भटकती रही 16 साल की लड़की,

18 मई 1993 को ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में रोजर वॉटसन और जूली वॉटसन के घर नन्ही सी बच्ची का जन्म हुआ। नाम रखा गया जैसिका वॉटसन। जैसिका को घूमने फिरने के दौरान समुद्र से इतना लगाव हो गया कि महज 11 साल की उम्र में उसने सोच लिया था कि वह एक न एक दिन पूरी दुनिया के समुद्र का सफर अकेले तय करेगी।

लेकिन उसे ये भी अंदाजा था कि ऐसा करने के लिए उसे बहुत ज्यादा तैयारियों की जरूरत पड़ेगी। यहीं से जैसिका ने इसकी तैयारियां करना शुरू कर दिया। उसने समुद्र से जुड़ी हर एक चीज की जानकारियां जुटाईं। कैसे समुद्र में सर्वाइव किया जा सकता है। अगर आप अकेले समुद्र में फंस जाएं तो कैसे खुद को बचाएं। सब चीजों को वह बहुत ही गहराई से पढ़ती और सीखती। फिर उसने अपनी पहली प्रैक्टिस शुरू की। उसने अकेले ही अपना पहला समुद्री ट्रिप शुरू किया। लेकिन इस छोटे से ट्रिप में उसका एक्सीडेंट हो गया। क्योंकि रात के समय वह एक बड़े कार्गो शिप को नहीं देख पाई जिसके कारण उसकी याच कार्गो शिप से जा टकराई। बेशक उसे इस हादसे में उसे चोट आई। लेकिन बावजूद इसके उसका हौसला और ज्यादा बुलंद हो गया। इस हादसे से उसने सबसे बड़ा सबक ये सीखा कि अपनी याच को कैसे कंट्रोल किया जा सकता है।

बेटी की जिद के आगे हारे माता-पिता–वह दोबारा ऐसे ही ट्रिप पर जाना चाहती थी। लेकिन इस हादसे के बाद सभी ने उसे चेतावनी दी कि उसे दोबारा ऐसी ट्रिप नहीं करनी चाहिए। क्योंकि अभी वह ऐसी ट्रिप के लिये तैयार नहीं है। लेकिन फिर भी जैसिका ने ठान लिया था कि वह दोबारा ऐसा ट्रिप करेगी, वो भी पूरी तैयारी के साथ। इसके बाद 16 साल की उम्र में उसने एक ऐसे ट्रिप का प्लान बनाया जो कि किसी को भी नामुमकिन लग रहा था। जब उसने

इस ट्रिप के बारे में माता-पिता को बताया तो पहले उन्होंने उसका साथ नहीं दिया। लेकिन वे भी बाद में बेटी की जिद के आगे हार गए और उन्होंने ट्रिप पर भेजने के लिए हामी भर दी।

ट्रिप का रूट किया तैयार, मिले स्पॉन्सर्स–जैसिका ने अपना पूरा रूट तैयार कर लिया था। उसके प्लान के मुताबिक, वह पहले ऑस्ट्रेलिया से निकलते हुए न्यूजीलैंड, फिजी और किरिबाती होते हुए साउथ अफ्रीका पहुंचेगी। जिसके बाद वो एक बार फिर ऑस्ट्रेलिया वापस लौटेगी। लेकिन इस ट्रिप के लिए उसे बहुत सारे पैसों की जरूरत थी। इसके लिए उसने स्पॉन्सर्स को ढूंढना शुरू किया। उसे जल्द ही स्पॉन्सर्स भी मिल गए। क्योंकि पुराने ट्रिप के कारण वह काफी हद तक फेमस हो चुकी थी।

18 अक्टूबर 2009 को शुरू की यात्रा–अब जैसिका के पास ट्रिप के लिए पैसा भी था और उसने अपनी एक याच भी तैयार कर ली थी। फिर दिन आया 18 अक्टूबर 2009 का।

जैसिका ने 30 मीटर लंबी गुलाबी रंग की याच को समुद्र में उतारा। सभी को बाय-बाय करके वह समुद्री यात्रा पर निकल गई। शुरुआती कुछ दिन तो जैसिका के आराम से बीते। उसे लगा कि इस ट्रिप को जितना मुश्किल उसने सोच रखा था, यह उतना भी मुश्किल नहीं है। बोट पर उसका हर दिन आराम से बीत रहा था। वह इस दौरान अपनी वीडियो भी बनाती, फोटो लेती, स्कूल का काम करती, मछलियां पकड़ती, और अपनी एक डायरी में हर दिन की बात लिखती। इसके साथ ही वह बीच-बीच में बोट पर भी ध्यान रखती कि कहीं वह भटक न जाए।

लेकिन दो हफ्ते बीतने के बाद उसकी याच मरम्मत मांगने लगी। जैसिका ने खुद ही बोट को ठीक भी किया। फिर एक महीने बाद जैसिका ने इक्वेटर लाइन को जार्विस आइलैंड के पास से पैसिफिक ओशियन के बिल्कुल बीच में रहते हुए क्रॉस कर लिया। वह पैसिफिक ओशियन के बिल्कुल बीच में पहुंच चुकी थी। लेकिन अब आगे बहुत ज्यादा ठंड होने वाली थी। पानी भी बहुत ज्यादा बर्फीला होने वाला था। जिससे उसकी मुश्किलें बहुत ज्यादा बढ़ चुकी थीं। एक बार तो इतना भयंकर तूफान आया कि उसकी बोट पलटने ही वाली थी। फिर भी उसने जैसे-तैसे अपनी याच को बचा लिया। लेकिन ठंड के कारण अब जैसिका काफी बीमार रहने लगी और उसके सिर में भी दर्द रहने लगा। उसने तभी भी हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी डायरी में इस बात का जिक्र भी किया है कि बुखार से लड़ने के बाद उसका मन और भी ज्यादा मजबूत बन चुका था।

मां ने नहाने के लिए कहा तो लड़के ने फोन करके पुलिस बुला ली

सर्दी का मौसम चल रहा है और देश के कई इलाकों में तो इतनी ठंड है कि लोग अपने घरों से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। इसी बीच एक ऐसा मामला सामने आया है जहां एक बच्चे ने अपनी ही मां के खिलाफ शिकायत करते हुए पुलिस बुला ली। बच्चे ने शिकायत कर दी कि उसे जबरदस्ती नहलाया जा रहा है। इतना ही नहीं पुलिस पहुंच भी गई तब जाकर पूरा मामला सामने आया।

यह घटना उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले की है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यह घटना अक्खापुर इलाके की है यहां की एक महिला ने अपने बेटे को नहाने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया, पिता के डांटने से नाराज बेटे ने 112 पर फोन करके पुलिस बुला ली। बेटे ने पुलिस को बताया कि उसे इतनी कड़ाके की सर्दी में जबरदस्ती नहलाया जा रहा है। इतना ही नहीं उसने यह भी कहा कि उसके बाल भी जबरदस्ती कटवाए गए हैं। इसके बाद जब वहां पुलिस की टीम पहुंची तो सब हैरान रह गए और सबकी हंसी छूट गई। फिलहाल किसी तरह बच्चे को समझाकर पुलिसकर्मी वहां से वापस लौट गए लेकिन यह मामला अब क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया है। बताया जा रहा है कि बच्चे ने अपने स्टाइल में बाल कटवाने की जिद पकड़ ली थी लेकिन उसका पिता अपने तरीके से बाल कटवाना चाहते थे। फिर उसी समय बच्चे की मां ने उसको नहाने के लिए बोला लेकिन बच्चे ने सर्दी का बहाना लेकर मना कर दिया। इस पर पिता ने डांट लगा दी और उसने नाराज होकर पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस के आने के बाद आसपास के लोग और ग्रामीण एकत्र हो गए। आखिर में बच्चे को समझा बुझाकर शांत किया गया।

अब मुर्दा इंसानों से बनेनी खाद, अमेरिका ने शुरू की परंपरा

न्यूयार्क । अमेरिका में अंतिम संस्कार को इको फ्रेंडली बनाने की पहल शुरू की जा चुकी है यानी मरने के बाद इंसानी शवों से 'नेचुरल ऑरगेनिक रिडक्शन' प्रक्रिया के तहत खाद बनाया जाएगा। इस प्रोसेस में करीब 30 दिन का वक्त लगेगा।

इको फ्रेंडली अंतिम संस्कार एक ऐसा प्रोसेस है जिसमें इंसानों की मृत शरीर को खाद बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। खाद बनने की इस प्रक्रिया को ह्यूमन कंपोस्टिंग के नाम से जाना जाता है। अमेरिका में अब तक 6 राज्य अंतिम संस्कार की इस प्रक्रिया अपना चुके हैं जिनमें वाशिंटन के अलावा कैलिफोर्निया, कोलोराडो, ओरेगन, वर्मोंट और न्यूयार्क शामिल हैं।

लाखों रुपए मिलने पर भी कोई नहीं करेगा ये काम, नौकरी देख खौफ खा जाएंगे आप

नई दिल्ली

इन दिनों सोशल मीडिया पर बहुत तेजी से एक वीडियो वायरल हो रहा है जो यूजर का ध्यान अपनी तरफ खींच रहा है। इस वीडियो में एक शख्स मौजूद है। इसका काम देख आपको खुद की आंखों पर भरोसा नहीं होगा। इस शख्स का काम देख यही लगेगा कि यह अपनी मौत को खुद दावत दे रहा है।

इस वीडियो में एक व्यक्ति तालाब के किनारे धूप सेक रहे मगरमच्छों को डंडे से मारते हुए पानी में भगाता है। उस शख्स से खौफ खाते हुए मगरमच्छ भी तेजी से पीछे की ओर हटते हैं। इस काम के दौरान उस व्यक्ति में जरा सा भी डर नहीं दिखाई देता है। डंडे मारते हुए एक मगरमच्छ उस व्यक्ति की तरफ बढ़ता है लेकिन दूसरा डंडा खाते वह पानी की तरफ भागने लगता है। उस शख्स के पीछे से एक ऑटो रिक्शा निकलती है

जिससे पता चलता है कि वो लोग मगरमच्छों को खाना खिलाने की तैयारी कर रहे हैं। इस तालाब में एक दो या तीन नहीं बल्कि सैकड़ों की तादाद में मगरमच्छ मौजूद हैं।

इस वीडियो को जिस किसी ने भी देखा उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं। सोशल मीडिया यूजर्स का रिएक्शन भी इस पर खूब आया। किसी ने ह्यूमन राइट्स की बात की तो किसी ने एनिमल राइट्स का हवाला दिया। इस वीडियो को अब तक 2.4 मिलियन से ज्यादा बार देखा जा चुका है और 38000 से ज्यादा लाइक किया जा चुका है। बता दें कि लाइक और कमेंट का सिलसिला अभी भी थमने का नाम नहीं ले रहा है।

ये है एक ऐसा घर, जहां रहने वाले शख्स को नहीं भरना पड़ता बिजली-पानी का बिल

नई दिल्ली

यह घर आम घरों की तरह ही है, लेकिन मालिक ने कुछ ऐसा जुगाड़ फिट किया, जिससे उनकी इनकम भी बढ़ गई। क्या आपने कभी सुना है कि गुजरात के अमरेली में कनुभाई करकरे के घर के बाहर खड़े होकर अंदाजा नहीं लगा पाएंगे कि आखिर उन्होंने ऐसा क्या जुगाड़ लगाया, जिससे उन्हें बिजली-पानी का बिल नहीं भरना पड़ता, उल्टा उन्हें ही हजारों रुपयों का मुनाफा हो रहा है। आप भी कुछ ऐसा ही कर सकते हैं। चलिए जानते हैं कि आखिर इस घर में क्या है बेहद खास।

राज्य सरकार के शिक्षा विभाग के एक अधिकारी कनुभाई ने 2000 में 2.8 लाख रुपये में घर का डिजाइन और निर्माण किया। हालांकि, घर के कामों के लिए एक वास्तुकार पर आंख मूंदकर भरोसा करने के बजाय, उन्होंने ऐसा घर को डिजाइन किया कि यह सभी के लिए एक उदाहरण बन जाए। शहर में रहने वाले लोगों के लिए स्थायी और इनकम वाला घर तैयार किया। कनुभाई का घर ऐसा है, जहां तीन साल तक किसी अन्य सोर्स की मदद के बिना पानी की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है।

इसके अलावा, कनुभाई का परिवार पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जैविक सब्जियां उगाता है और परिसर के भीतर अपने सीवेज के पानी का उपचार करता है। इसके अलावा, यह घर ग्रिड को बिजली की आपूर्ति करके सरकार से 10,000 रुपये भी प्राप्त करता है। कनुभाई राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में पानी की कमी के मुद्दे से उपजे स्थायी सुविधाओं को पेश करने के लिए अपनी प्रेरणा बताते हैं।

पानी-बिजली की कमी को पूरा करने का है अच्छा जुगाड़ उन्होंने कहा, इस क्षेत्र को हर गर्मियों में पानी की कमी का सामना करना पड़ता है, और हमारे पड़ोस को महीने में 15 दिन पानी मिलता है। यह अत्यधिक असुविधा का कारण बनता है, और इसलिए मैंने संकट को हल करने के लिए स्थायी उपाय करने का फैसला किया। कनुभाई ने घर को अधिक से अधिक धूप आने का तरीका ढूंढा। उन्होंने खिड़कियों को बड़ा बनाया और यह सुनिश्चित किया कि घर में हॉरिजेंटल क्रॉस-वेंटिलेशन तकनीक के साथ हवा सर्कुलेट हो। इस टेक्नीक से घर में ठंडी हवा अच्छे से आती है और इलेक्ट्रिकल लाइट व फैन का कम यूज होता है।

यात्री को 2 बार पढ़ा दिल का दौरा, साथ बैठे डॉक्टर ने बचा दी जान

नई दिल्ली। यह घटना एयर इंडिया की एक फ्लाइट में की है। फ्लाइट ब्रिटेन से मुंबई आ रही थी। इसी फ्लाइट में अचानक एक यात्री अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा। वह ना तो यह सांस ले पा रहा था और ना उसकी नब्ज चल रही थी। इस फ्लाइट में डॉ विश्वराज वेमला भी सफर कर रहे थे। वे तत्काल उस यात्री के पास पहुंच गए।

डॉक्टर ब्रिटेन के बर्मिंघम में मौजूद क्वीन एलिजाबेथ हॉस्पिटल में हेपेटोलॉजिस्ट हैं। उन्होंने यात्री को चेक किया और फिर फ्लाइट के केबिन क्रू से इमरजेंसी किट मांगी। इसके बाद उन्होंने अपने तरीके से उसकी देखभाल करनी शुरू कर दी। करीब एक घंटे बाद मरीज को होश आया और उसने डॉक्टर से बात की। इसके बाद हैरानी की बात यह रही कि उसे फिर से एक बार और हार्ट अटैक आ गया।मरीज को आए दूसरे झटके के बाद डॉक्टर ने फिर उसकी देखभाल करनी शुरू कर दी।

आपका राशिफल 08 जनवरी

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ): जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। रुपए पैसे की सुविधा नहीं मिल पाएगी। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे। शुभांक-5-6-9

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को ह): अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। किसी नजदीकी शुभचिंतक सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक 2 5 7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। पुराने मित्र से मिलन होगा। पुरुषार्थ का सहारा लें। शुभांक-5-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक 4 6 7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्यवसायिक स्थितियां पैदा होंगी। आलस्य का त्याग करें। शुभांक-6-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सभा-गोष्ठियों में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आनन्ददायक दिन रहेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-6-7-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू): स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की दौड़-भाग से यदि बचा जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। आय के अच्छे योग बनेंगे। संतान की उन्नति के योग हैं। शुभांक 5 6 8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होंगी। निकटस्थ लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। मान सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से काम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-5-6-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। आपके काम आसानी से बनते चले जाएंगे साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-5-8-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्यावसायिक का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। शुभांक 3 7 9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): धर्म कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। किसी पुराने संकल्प को पूरा कर लेने का दिन है। "आगे आगे गोरख जागे" वाली कहावत चरितार्थ होगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-1-6-9

स्पेशल खबर

आज बवर्ली 70 साल की हो गई हैं। इंडस्ट्री से जुड़ी हुई हैं। रियल लाइफ में यह काफी ग्लैमरस...

4 पोते-पोतियों की दादी है ये 70 साल की सुपरमॉडल, फिटनेस देखकर होगी जलन

हॉलीवुड सुपरमॉडल बवर्ली जॉनसन ने खुद के नाम किया है। बवर्ली जॉनसन स्विमिंग में माहिर रहीं। लॉ की भी पढ़ाई की, लेकिन शायद किस्मत में कुछ और ही लिखा था।

70 के दशक में इन्होंने मॉडलिंग की दुनिया में कदम रखा। उस समय फैशन इंडस्ट्री में फेयर स्किन और ब्लू आइज वाली मॉडल्स को ही पसंद किया जाता था। बवर्ली के लिए सफर की शुरुआत मुश्किल तो रही लेकिन उन्होंने अपनी जगह बनाई।

हालांकि, कई फैशन डिजाइनर्स ने उन्हें रिजेक्ट किया और कहा कि तुम खुद को समझती क्या हो? लेकिन बवर्ली ने किसी के कुछ भी कहने पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। हेटर्स को नफरत देने के लिए उनके पास समय नहीं था।

खुद के समय का इन्होंने सही इस्तेमाल किया और मॉडलिंग इंडस्ट्री में बड़ा नाम कमाना शुरू कर दिया। इसके लिए बवर्ली ने थोड़ी प्लानिंग की। अपनी नेटवर्क एजेंसीज बदलीं, टीम बदली और धीरे-धीरे ऊचाइयों को छूने लगीं।

आज बवर्ली 70 साल की हो गई हैं। इंडस्ट्री से जुड़ी हुई हैं। रियल लाइफ में यह काफी ग्लैमरस हैं। फिटनेस और टोन्ड फिगर मेनटेन करने के मामले में अच्छे- अच्छों को टक्कर देती हैं। दिन की शुरुआत मेडिटेशन, क्रॉस ट्रेनिंग और योग से करती हैं। इसके बाद नाश्ते में केवल गुनगुना नींबू पानी और स्ट्रॉबेरी लेती हैं। दोपहर और रात के खाने में मीट और उबली हुई सब्जियों को खाती हैं। अगर कुछ मीठा खाने का मन करता है तो वह हमेशा योगर्ट (मीठी फ्लेवर्ड दही) खाना प्रिफर करती हैं। इसके अलावा बवर्ली एक दिन अपना चीट डे भी रखती हैं, जिसमें वह बटर पॉपकॉर्न से अपनी क्रेविंग्स को पूरा करती हैं।

70 की उम्र में बवर्ली की स्किन काफी टाइट नजर आती हैं। इसकी वजह स्किन ट्रीटमेंट है। सर्जरीज से इन्होंने खुद की स्किन को मेनटेन रखा हुआ है। 1952 अक्टूबर को जन्मीं बवर्ली ऐन जॉनसन पेश से अमेरिकन मॉडल, एक्ट्रेस, सिंगर और बिजनेसवुमन हैं। 1974 में यह पहली अफ्रीकन- अमेरिकन मॉडल बनी थीं, जो अमेरिकन वोग के कवर पेज पर आई थीं। पहली ब्लैक वुमन थीं, जो फ्रेंच एल (श्वद्मद्मद्ग) मैगजीन के कवर पेज पर साल 1974 में दिखी थीं। बवर्ली ने दो बार शादी रचाई। साल 1971 में रियल एस्टेट एजेंट बिली पोर्टर संग इनकी पहली शादी हुई। उस समय 19 साल की थीं। हालांकि, शादी के तीन साल बाद बवर्ली का बिली से तलाक हो गया। इसके बाद 25 साल की उम्र में बवर्ली ने दूसरी शादी रचाई। म्यूजिक प्रोड्यूसर डैनी सिम्स से इन्हें एक बेटी हुई, जिसका नाम अनन्सा रखा। दो साल बाद डैनी और बवर्ली अलग हो गए। बवर्ली की दूसरी शादी भी सक्सेसफुल नहीं रही। बवर्ली की बेटी अनन्सा के साथ काफी अच्छी बॉन्डिंग शेयर करती हैं।